सरदार वल्लभभाई पटेल: राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र निर्माण के शिल्पी

- लेखक : शुभम गोंडीकर
- तारीख : October 31, 2026

भारत के इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जो केवल इतिहास का हिस्सा नहीं बनते, बल्कि उसकी दिशा बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सरदार वल्लभभाई पटेल जी ऐसे ही व्यक्तित्वों में से एक थे। 31 अक्टूबर 1875 को जन्मे सरदार पटेल जी को 'लौह पुरुष' के नाम से जाना जाता है। उनकी जयंती आज राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाई जाती है। यह दिन उनके उस योगदान का स्मरण कराता है, जिसमें उन्होंने केवल स्वाधीनता आन्दोलन में भाग नहीं लिया, बल्कि स्वतन्त्र भारत के राजनीतिक और प्रशासनिक एकीकरण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वाधीनता आन्दोलन में सरदार पटेल जी की भूमिका

सरदार पटेल जी ने अपने सार्वजनिक जीवन की शुरुआत एक सफल वकील के रूप में की। अहमदाबाद में उनकी अच्छी वकालत चलती थी। उस समय वे आधुनिक जीवन शैली अपनाते थे और अंग्रेजी वेशभूषा का भी प्रयोग करते थे। महात्मा गांधी जी के सम्पर्क में आने के बाद उनके जीवन की दिशा बदली। वे धीरे धीरे राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़े और सार्वजनिक जीवन में सक्रिय हुए।

उनका पहला महत्त्वपूर्ण आन्दोलन खेड़ा सत्याग्रह था। उस समय खेड़ा क्षेत्र में फसल खराब होने के कारण किसान लगान देने की स्थिति में नहीं थे, लेकिन ब्रिटिश सरकार कर वसूली पर अड़ी हुई थी। सरदार पटेल जी ने गाँव गाँव जाकर किसानों को संगठित किया और उन्हें एकजुट होकर अपनी बात रखने के लिए प्रेरित किया। आन्दोलन के परिणामस्वरूप सरकार को किसानों की माँगों पर विचार करना पड़ा। इसके बाद 1928 का बारडोली सत्याग्रह सरदार पटेल जी के राजनीतिक जीवन की महत्त्वपूर्ण घटना बना। बारडोली में भूमि राजस्व में वृद्धि के विरोध में किसानों ने आन्दोलन किया। सरदार पटेल जी ने इसका नेतृत्व किया और ग्राम स्तर तक मजबूत संगठन खड़ा किया।

बारडोली सत्याग्रह में सरदार पटेल का नेतृत्व

आन्दोलन में महिलाओं की भी सक्रिय भागीदारी रही। सरकारी दबाव के बावजूद आन्दोलन संगठित रूप से चलता रहा। अन्ततः सरकार ने जाँच के लिए समिति बनाई और बढ़े हुए लगान में कमी की गई। इसी आन्दोलन के बाद वल्लभभाई पटेल जी को 'सरदार' के नाम से व्यापक पहचान मिली। 1930 के नमक सत्याग्रह और 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। वे कई बार जेल गए और कांग्रेस संगठन को मजबूत करने में भी उनका उल्लेखनीय योगदान रहा।

रियासतों का एकीकरण

स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय भारत के सामने सबसे बड़ी राजनीतिक चुनौतियों में से एक देशी रियासतों का प्रश्न था। ब्रिटिश शासन की समाप्ति के साथ सैकड़ों रियासतों के भविष्य का निर्णय होना था। स्वतन्त्र भारत की सरकार में सरदार पटेल जी उपप्रधानमन्त्री और गृह मन्त्री बने। रियासतों के एकीकरण की जिम्मेदारी मुख्य रूप से उनके पास थी। इस कार्य में वी.पी. मेनन ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सरदार पटेल जी ने अधिकांश रियासतों के शासकों से संवाद और समझौते का मार्ग अपनाया। उन्हें भारत संघ में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया गया और धीरे धीरे अधिकांश रियासतें भारत का हिस्सा बन गईं। कुछ रियासतों के मामले अधिक जटिल थे।

जूनागढ़

जूनागढ़ के नवाब ने पाकिस्तान में शामिल होने का निर्णय लिया, जबकि वहाँ की अधिकांश जनता हिन्दू थी। बाद में नवाब पाकिस्तान चले गए। इसके बाद वहाँ जनमत संग्रह कराया गया और जूनागढ़ भारत में सम्मिलित हो गया। इस पूरे घटनाक्रम में सरदार पटेल जी की दृढ़ता और राजनीतिक स्पष्टता महत्त्वपूर्ण रही।

रियासतों के एकीकरण और सौराष्ट्र संघ का निर्माण

हैदराबाद

हैदराबाद रियासत भारत के मध्य में स्थित थी, लेकिन निजाम भारत में विलय के लिए तैयार नहीं थे। बातचीत और समझौते के प्रयासों के बाद भी स्थिति नहीं सुलझी। 13 सितम्बर 1948 को भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन पोलो' शुरू किया। कुछ ही दिनों में हैदराबाद की सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया और रियासत भारत में सम्मिलित हो गई। हैदराबाद के भारत में विलय ने देश के राजनीतिक एकीकरण को और मजबूत किया।

जम्मू कश्मीर

जम्मू कश्मीर का प्रश्न भी स्वतन्त्रता के बाद भारत के सामने एक जटिल विषय के रूप में आया। इस पूरे घटनाक्रम में सरदार पटेल जी की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। रियासतों के एकीकरण की प्रक्रिया ने भारत को राजनीतिक रूप से एक राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में निर्णायक योगदान दिया। इसी कारण सरदार पटेल जी को भारत के राजनीतिक एकीकरण के प्रमुख शिल्पियों में गिना जाता है।

प्रशासन और राष्ट्र निर्माण

सरदार पटेल जी की दृष्टि केवल राजनीतिक एकीकरण तक सीमित नहीं थी। वे प्रशासनिक स्तर पर भी एक मजबूत और संगठित भारत के पक्षधर थे। उनका मानना था कि विशाल देश को एक साथ रखने के लिए निष्पक्ष, सक्षम और अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवाएँ आवश्यक हैं। इसी सोच के तहत भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय पुलिस सेवा जैसी अखिल भारतीय सेवाओं को स्वतन्त्र भारत में बनाए रखने और विकसित करने का समर्थन किया गया।

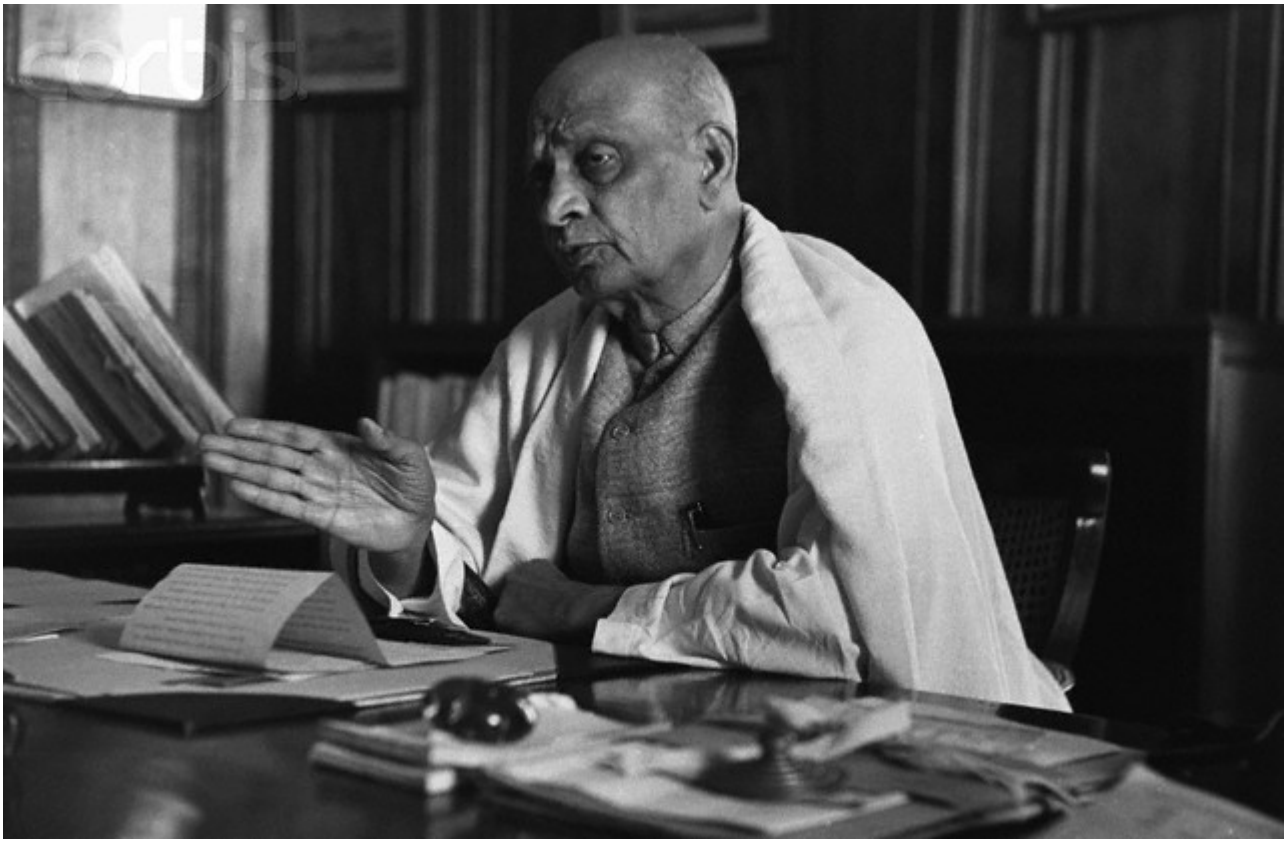

प्रशासनिक राष्ट्र निर्माण के शिल्पी सरदार पटेल

सरदार पटेल जी इन सेवाओं को देश के प्रशासनिक ढाँचे की रीढ़ मानते थे। उनका विचार था कि प्रशासनिक अधिकारी किसी दल के नहीं, बल्कि राष्ट्र और संविधान के प्रति उत्तरदायी होने चाहिए। विभाजन के समय उत्पन्न शरणार्थी संकट और साम्प्रदायिक तनाव की परिस्थितियों में भी गृह मन्त्री के रूप में उनके सामने बड़ी चुनौतियाँ थीं। दिल्ली सहित कई क्षेत्रों में विस्थापन, हिंसा और पुनर्वास से जुड़े प्रश्नों से सरकार को जूझना पड़ा। सरदार पटेल जी मजबूत केन्द्र सरकार के समर्थक थे। उनका विश्वास था कि नवस्वतन्त्र भारत की एकता और स्थिरता के लिए केन्द्र को पर्याप्त अधिकार और प्रशासनिक क्षमता मिलनी चाहिए।

राष्ट्रीय एकता दिवस और सरदार पटेल जी की स्मृति

भारत सरकार ने 2014 में 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। इसका उद्देश्य सरदार पटेल जी के योगदान को स्मरण करना और राष्ट्रीय एकता के महत्त्व को रेखांकित करना है। भारत अनेक भाषाओं, धर्मों, परम्पराओं और सांस्कृतिक क्षेत्रों वाला देश है। इसकी विविधता उसकी विशेषता है, लेकिन इस विविधता के बीच राष्ट्रीय एकता बनाए रखना भी उतना ही आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर देश के अनेक हिस्सों में 'रन फॉर यूनिटी' का आयोजन किया जाता है। विद्यालयों, महाविद्यालयों और सरकारी संस्थानों में राष्ट्रीय एकता की शपथ भी ली जाती है।

गुजरात में स्थित 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' भी सरदार पटेल जी की स्मृति से जुड़ा एक प्रमुख राष्ट्रीय स्मारक है। 182 मीटर ऊँची यह प्रतिमा उनके राजनीतिक और राष्ट्रीय योगदान की स्मृति में स्थापित की गई है। आज के समय में सरदार पटेल जी का जीवन यह स्मरण कराता है कि विविधता के बीच राष्ट्रीय एकता केवल राजनीतिक व्यवस्था का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व भी है। सरदार वल्लभभाई पटेल जी ने स्वतन्त्र भारत को केवल राजनीतिक रूप से एक करने में योगदान नहीं दिया, बल्कि मजबूत प्रशासन, राष्ट्रीय एकता और संगठित शासन व्यवस्था की आवश्यकता पर भी बल दिया।

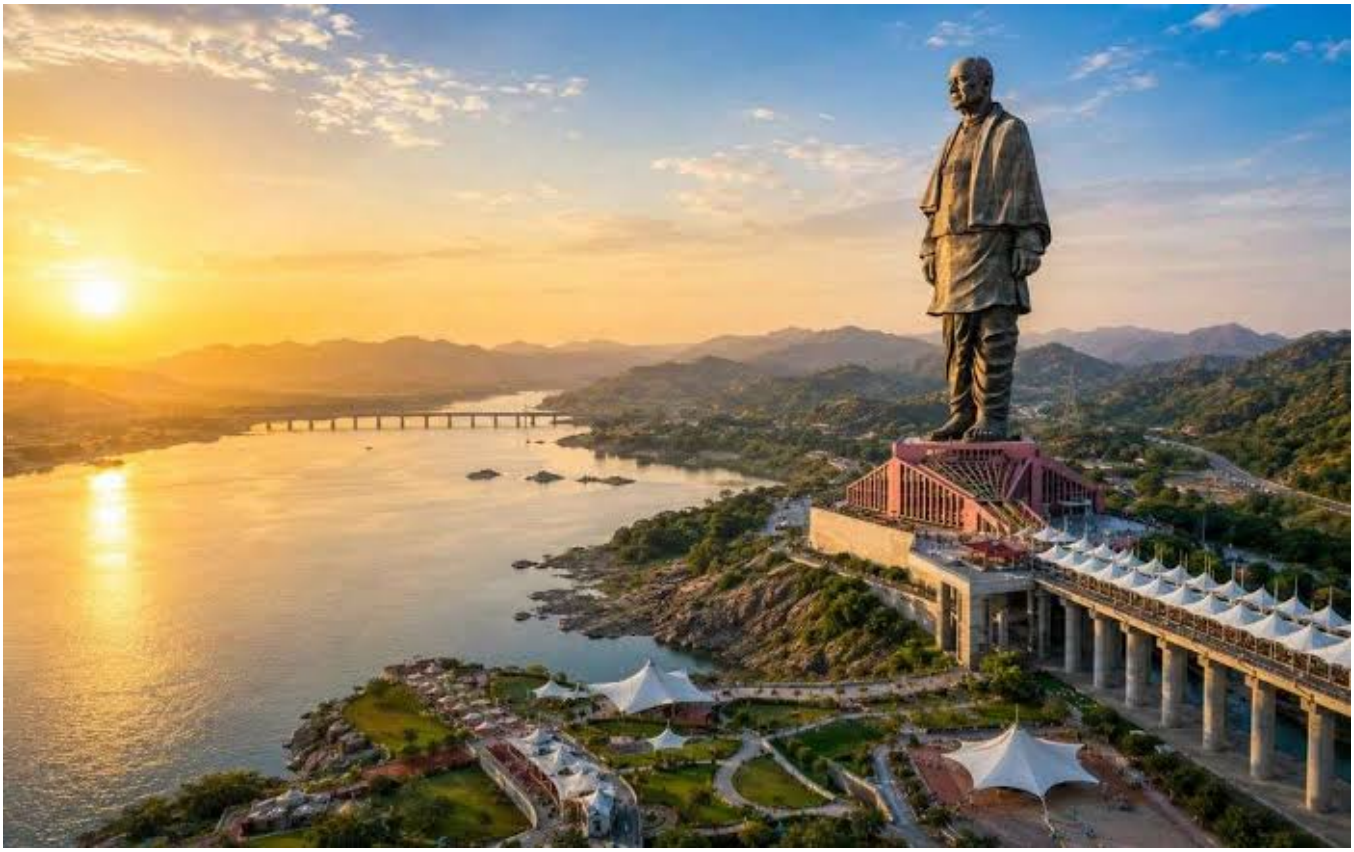

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी: राष्ट्रीय एकता का स्मारक

खेड़ा और बारडोली के किसान आन्दोलनों से लेकर देशी रियासतों के एकीकरण और प्रशासनिक ढाँचे के निर्माण तक उनका सार्वजनिक जीवन राष्ट्र निर्माण की अनेक प्रक्रियाओं से जुड़ा रहा। राष्ट्रीय एकता दिवस पर सरदार पटेल जी का स्मरण केवल श्रद्धांजलि तक सीमित नहीं होना चाहिए। उनके जीवन से संगठन, दृढ़ संकल्प, प्रशासनिक स्पष्टता और राष्ट्रीय एकता के महत्त्व को समझना भी उतना ही आवश्यक है।

लेख:
शुभम गोंडीकर
हैदराबाद